अमरकांत के उपन्यास 'कटीली राह के फूल' में विद्यार्थी वर्ग की विसंगतिया

डॉ. सोमवीर

हिन्दी विभाग
जिला–महेन्द्रगढ

सार

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार अमरकांत का उपन्यास 'कटीली राह के फूल' शिक्षा जगत की यथा तथ्य स्थितियों पर आधारित है। अमरकांत जी ने इस उपन्यास में आज के समय में उत्पन्न शिक्षा जगत की विसंगतियों को कथा वस्तु का आधार बनाया है। आधुनिकता के दौर में विद्यार्थियों पर ऐसे दुष्प्रभाव पड़ रहे हैं कि उनका व्यक्तित्व निर्माण का ढांचा चरमरा गया है। बच्चे कच्ची मिट्टी (मृदा) के समान होते है जिनका व्यक्तित्व निर्माण शिक्षक वर्ग के साथ–साथ अभिभावक व सामाजिक संस्थाओं–विद्यालय व समाज के विभिन्न रूपों का दायित्त्व भी है।

परिचय

इस औपन्यासिक रचना में तीन प्रकार की विसंगतियां देखने को मिलती हैं यथा :–

(क) विद्यार्थी वर्ग की विसंगतियां
(ख) अध्यापक वर्ग की विसंगतियां
(ग) शिक्षाधाम प्रबन्धन की विसंगतियां

इस शोधपत्र में अमरकांत के उपन्यास 'कटीली राह के फूल' में शिक्षा जगत की विद्यार्थी वर्ग की विसंगतियों को जानने की चेष्टा की गयी है। अमरकांत ने स्वयं इस उपन्यास में स्वीकार किया है कि शिक्षा जगत की आपसी खींचतान इस रचना में प्रदर्शित की गयी है साथ ही इसमें ग्रामीण एवं नगरीय परिवेश के मध्य की दूरियों को उद्घाटित किया गया है। विद्यार्थियों से से जुड़ी विसंगतियां निम्नलिखित हैं :–

उचित मार्ग दर्शन

बच्चों के उचित मार्ग दर्शन का उत्तरदायित्व अभिभावकों व परिवार के अन्य सदस्यों का है। पारिवारिक मार्गदर्शन का आधार पाकर बच्चा जीवन में आगे बढ़ता है। परिवार के परिवेश व पर्यावरण का उचित और अनुचित प्रभाव संतान पर परिलक्षित होता है। जीवन मूल्यों व संस्कारों की शिक्षा बच्चे अपने परिवार से ही सीखते हैं जिनका प्रयोग वह समाज में करता है।

लेकिन आधुनिक 21वीं सदी वैज्ञानिकता, बौद्धिकता एवम् तटस्थता की सदी है। कंम्प्यूटर, इंटरनेट आदि वैज्ञानिक गति ने मनुष्य जीवन को सरल एवम् सुगम बना दिया है। इन उपकरणों से जितना हमारा जीवन सरलीकृत हुआ उतना ही इसने हमारे जीवन को दुर्गम बना दिया है। इंटरनेट चैटिंग (सह–वार्तालाप), फेसबुक व अन्य टी.वी. कार्यक्रमों ने लोगों को अपना आदी बना लिया है। इनके प्रयोग से गलत संस्कारों एवं भावनाएं पनप रही हैं।

आधुनिक दौर प्रतिद्वन्द्विता का है। इस दौड़ में प्रत्येक अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने में तत्पर है। आज यदि माता–पिता अपनी विचारों या भावनाओं को बच्चों पर थोपने का प्रयास करते हैं और अभिभावक अपने बच्चों से अधिक आशाएं रखने लगे हैं जिसके कारण छात्रों में दुष्प्रवृत्तियां दृष्टिगोचर होने लगी हैं।

यही चीजें कक्षा–शिक्षण के दौरान भी होती है। कक्षा का वातावरण, रूचिकर न होने के कारण बच्चों में पलायन की प्रवृत्ति बलवती होती जाती है।

कक्षा से पलायन :

माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्य बच्चों का मार्ग दर्शन करते हैं और उनमें अच्छी आदतों का भी समावेश करते हैं। माता–पिता व परिवार के अन्य सदस्य ही मिल कर बच्चों में जीवन के प्रति यही दृष्टिकोण को अपनाना भी सीखाते हैं। 'कटीली राह के फूल' उपन्यास के पात्र अनूप कुमार में भी यह विसंगति पनपति है। यह प्रवृत्ति उनको उनके (अनूप कुमार) सहपाठियों से प्राप्त हुई है। अनूप कुमार के ही शब्दों में, ''उसकी देखा–देखी मैं भी कुछ दिनों से पॉलिटिक्स के लम्बे भरे क्लास में हाजिरी के बाद खिड़की के रास्ते बाहर बरामदे में कूदकर गायब हो जाता था।''

अनूप कुमार शिक्षा हेतु गाँव से शहर आया था। उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता। गाँधी जी ने ऐसी शिक्षा को महत्त्व दिया है जो छात्रों के अनुरूप हो। अनूप कुमार जिन सपनों को संजोकर गांव से शहर आया था, वे सब उसकी कुसंगति के कारण धूमिल हो गए। कुसंगतियों के कारण उसका जीवन कष्टमय हो जाता है।

परिश्रम से जी चुराना :

आधुनिक युग में शिक्षा का अर्थ संकुचित हो गया है। शिक्षा का अर्थ केवल उपाधियां प्राप्त करना भर रह गया है और नौकरियाँ लेकर मात्र कुर्सी पर बैठकर काम करने तक ही सीमित हो गया है। परीक्षा में पास होने के लिए कुछ छात्र अनुचित साधनों से परीक्षा उतीर्ण कर लेते हैं । इनकी सफलता देख अन्य छात्र भी पढ़ाई से जी चुराने लगते हैं। जी चुराने के अन्य कारण भी हो सकते हैं जैसे– पाठ्यक्रम रोचक न होना, अध्यापक का अपने विषय पर पकड़ न होना, विद्यालय का वातावरण शिक्षा के अनुकूल न होना, आदि आदि ।

प्राचीन काल में जो शिक्षा हस्तकला पर आधारित थी, वह आधुनिक समय में लुप्त हो गई है। आज की शिक्षा ज्ञान पर आधारित तो है लेकिन काबसायी नहीं है अर्थात् अगर विद्यार्थी शिक्षा पूर्णकर बाहर निकलता है तो उसके लिए रोजगार पाना असंभव है।

जीवन में शीघ्रताशीध्र पाने के प्रवृत्ति पनपती जा रही है। परिश्रम करना प्रत्येक के वश में नहीं है। आज का विद्यार्थी इन तमाम प्रवृत्तियों से ग्रस्त है। अमरकांत के उपन्यास 'कटीली राह के फूल' में परिश्रम न करने की प्रवृत्ति को चरितार्थ किया गया है।

कॉलेज में प्रवेश करते ही युवा वर्ग एक अलग ही दुनियां में विचरण करने लगता है। वह अनुभव करने लगता है कि उसको अब परिश्रम करने की आवश्यकता ही नहीं। वह यहां आकर स्वतन्त्रता महसूस करता है। स्वछन्द वातावरण पाकर वह अपने जीवन के अहम लक्ष्य को विस्मृत कर देता है। वह अपना अधिकतर समय लड़कियों के पीछे गवाँ देता है और प्रेम के वातावरण में पड़ जाने के बाद उसका मन पढ़ाई में और परिश्रम करने में नहीं लगता। शिक्षा जगत् एक ऐसा क्षेत्र है जिसका आलंबन पाकर कोई भी व्यक्ति, समाज, राष्ट्र अपना विकास कर सकता है।

सरल व शान्तिप्रिय होना :

विद्यार्थी के लिए सरल व शान्तिप्रिय होना कोई विसंगति नहीं लेकिन आवश्यकता से अधिक सरल होना भी उसके लिए हानिकारक हो सकता है। कहा भी जाता है कि ''अति से अमृत भी जहर बन जाता है।'' विद्यार्थी को किसी एक ही विषय में पारंगत करना शिक्षा का लक्ष्य नहीं होना चाहिए। डॉ. एम.एस. सचेदवा अपनी पुस्तक 'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा' में रूसो के विचारों के बारे में निम्न प्रकार से लिखते हैं कि– ''बच्चों को प्राकृतिक विज्ञानों में निर्देशन दिया जाना चाहिए। इस अवस्था के दौरान रूसों ने छात्रों के निम्न विषय बताऐ हैं :– विज्ञान, भाषाएं, गणित, लकड़ी का कार्य, संगीत, चित्रकारी, भूगोल, विद्य आदि।'' इन विषयों को पढ़ने वाले छात्र चंचल और शान्तिप्रियता के साथ–साथ हर विषय में सक्षम भी मिलेगा।

हम शिक्षण संस्थानों के प्रांगण में बहुत से छात्रों को एकांत में बैठे देख सकते हैं। ऐसे छात्र संकुचित प्रवृत्ति के होते हैं। ये पढ़ाई में होशियार हो सकते हैं लेकिन सामाजिक स्तर पर पिछड़ जाते हैं।

अधिकतर छात्र संकोची स्वभाव के होते हैं। वे अपनी प्रतिभा को विकसित नहीं कर पाते। इन छात्रों का स्वभाव सदैव शांत बना रहता है। भविष्य में अपनी इस प्रवृत्ति के कारण वह अन्य मेधावी छात्रों से पिछड़ जाते हैं।

यूटोपिया (अति स्वप्नशीलता) :

विद्वानों ने छात्रों की कल्पना शक्ति पर बल दिया है कि छात्रों को स्वयं कल्पना करने दे और स्वयं कार्य करने में इससे उनके मन में सृजन एवं जिज्ञासा का समावेश होगा और जीवन के रास्ते में आने वाली समस्याओं का स्वयं समाधान करने में सक्षम बनेंगें, लेकिन बहुत से विद्यार्थी अति स्वपनशीलता की स्थिति में चले जाते हैं जिसको हम यूटोपिया भी कहते हैं। कल्पना व स्वपन देखना एक आनन्दमय क्रिया है, लेकिन इसकी सबसे बड़ी समस्या है मानसिक तनाव से ग्रस्त छात्र अधिक कल्पना करने से मानसिक रोगी हो सकते हैं जिससे उनका मन पढ़ाई में नहीं लगता। अति स्वपनशील व्यक्ति का अपने उपर कोई नियन्त्रण नहीं रहता। वह अपनी मानसिक भावनाओं पर भी नियन्त्रण खो बैठता है। वह अलग ही दुनियां में विचरण करता है। वह हर परिणाम को अपनी इच्छा के अनुरूप पाने की कामना रखता है। यदि इच्छानुसार परिणाम नहीं मिलता तो यही कारण आत्महत्या का भी कारण बनता है। इसलिए अति स्वप्नशील होना छात्र जीवन में हानिकारक हो सकता है।

अजनबीपन :

मनुष्य इस संसार में एक अजनबी की तरह आता है, लेकिन अपने व्यवहार से ही वह भाई चारे में अपना मुकाम बनाता है। लेकिन मानव की सोच संकुचित होने के कारण ही वह अजनबी हो गया है। आपसी घृणा, द्वेष और अलगाववाद के कारण ही वह अकेला हो गया है। वह अपने ही घर में अकेला, बेगाना व पराया–सा हो गया है। जब वह अंतर्मन में झांकता है तो वह अपने को अकेला, असहाय पाता है। व्यक्ति अपने से ही नहीं दूसरों से भी अजनबी हो गया है। व्यक्ति इतना बेगाना और अजनबी हो गया है कि उसे अपनी ही चीख सुनाई नहीं देती। मनुष्य ने आज अपने आपको इतना

अजनबी कर लिया है अपनी माँ को माँ व पिता को पिता ही नहीं मानता। मित्रों से भी मित्रता की उम्मीद नहीं रख सकते। आदमी–आदमी से दूर हो गया है।

यह सामाजिक प्रवृत्ति बन चुकी है कि अजनबी व्यक्ति का हर कोई लाभ उठाना चाहता है । 'कटीली राह के फूल' उपन्यास के पात्र अनूप कुमान का भी लाभ यहाँ मकान मालकिन उठाती है। अनूप कुमार जब शिक्षा ग्रहण करने शहर आया तो मकान मालकिन उसके भोलेपन होने का लाभ उठाती। उससे घर का कार्य करवाती है।

अजनबीपन मनुष्य को हताश बना देता है। अजनबी होने के कारण मनुष्य अपने आपसे घृणा करने लगता है और यह कृत्य ही उसको आक्रांत करता रहता है। जिसके चलते उसका मानसिक विकास रूक जाता है। वह अपने तक ही संकुचित रहता है। उसका चहुंमुखी विकास रूक जाता है।

नशेड़ी प्रवृत्ति :

शिक्षा हमें सभ्य समाज के निर्माण करने में सहायता करती है, लेकिन इस सभ्य समाज की नींव को खोखला करता है नशा। जिस समाज में नशा अपनी जड़ें जमा लेता है वह समाज कभी सभ्य समाज नहीं बन सकता। आज इस नशे में अपनी जड़ें इस कद्र जमा ली हैं कि छात्रों को भी अपने आगोश में ले लिया। यह सभ्य समाज पर एक कलंक के समान है। आज सबसे ज्यादा नशा छात्र वर्ग करता है। यह नशा उनको तबाही की तरफ ले जा रहा है। सरकार भी इस नशे को रोकने के भरसक प्रयास कर रही है लेकिन निराशा ही हाथ लगी। सभ्य समाज में फैलती नशेड़ियों की तादात पर सरकार व कानून को सख्ती से कार्यवाही करनी होगी तथा नशे के उद्योगों को बंद करवाना होगा, नहीं तो हम अपने छात्रों के भविष्य को सही दिशा नहीं दे पाऐंगें।

छात्र जब नऐ परिवेश में आता है तो वहां वह अनेक प्रकार की बुराईयों से भी रूबरू होता है । वह यह नहीं समझ पाता कि उसके लिए क्या सही है क्या गलत? माता–पिता के साथ अध्यापक वर्ग को भी नजर रखनी होगी और इनको इस नशे से बचाना होगा।

सरकार ने भी नशा मुक्ति केन्द्र को खोला है, जिसमें नशेड़ियों का इलाज किया जाता है। शिक्षा के माध्यम से भी नशे की हानियों के बारे में प्रचार–प्रसार करना होगा। छात्र वर्ग को नशे के घातक परिणामों के बारे में सुचेत करना आवश्यक है।

नकल की समस्या :

कोठारी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि भारत का भाग्य निर्माण उसकी कक्षाओं में होता है। वैसे भी अध्यापक को राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है। किसी भी राष्ट्र के निर्माता उस देश के अध्यापक ही होते हैं। अध्यापक ही छात्रों में नैतिकता व उच्च मूल्यों को उत्पन्न करता है। अध्यापक को अपने विषय में दक्ष और नैतिक उच्च मूल्यों से सुसज्जित होना होगा। कुशल अध्यापक ही भारत देश के भाग्य को उज्ज्वल बना सकते हैं।

तेजी से बदलते परिवेश और इस प्रतियोगिताओं के समय में आज का अध्यापक वर्ग के साथ–साथ छात्र वर्ग में भी परिवर्तन परिलक्षित (दृष्टिगोचर) होता है। छात्रों में एक विसंगति प्रायः देखने को मिलती है वह नकल की। नकल करने का तरीका छात्रों में आम देखा जाता है। यह अच्छे अंक लेना, वो भी कम समय में और कम मेहनत करके बहुत आसान व सरल लगता है। यदि छात्र को नकल के माध्यम से ही सफलता मिलती रही तो छात्र कभी भी परिश्रम नहीं करेंगे। छात्रों में परिश्रम व स्वाभिमान जैसे नैतिक गुणों का संचार नितांत आवश्यक है। छात्रों को कक्षा में भी नकल की खामियों के बारे में भी सचेत करते रहना चाहिए। छात्रों को समझाना चाहिए कि वह दिखावे की चकाचौंध से विचलित न होकर अपनी बुद्धि से परीक्षा पास करनी चाहिए और अपने जीवन को सद्मार्ग पर चला कर अपने भविष्य को उज्ज्वल करना चाहिए।

आवासीय समस्या :

आदिकाल में शिक्षा गुरूकुलों में दी जाती थी। छात्र जब तक पूर्णशिक्षा ग्रहण नहीं कर लेता, उसको आश्रम में ही रहना होता था। परन्तु आधुनिक समय में इन सब बातों को ध्यान में नहीं रखा जाता। व्यवसायीकरण के इस युग में प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक रूप से सबल बनना चाहता है चाहे किसी का शोषण करके ही बने।

आज सरकार छात्रों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए आवासीय शिक्षण संस्थानों को खुलवा रही है और उन पर नजर भी रखती है। इसके बावजूद भी बहुत से शिक्षण संस्थानों में आवासीय स्थान न होने के कारण छात्रों को यहां–वहां रहना पड़ता है और उनके साथ आए दिन छात्र व छात्राओं के साथ हादसे हो रहे हैं। इसका शिकार सबसे ज्यादा छात्राओं को होना पड़ता है। शिक्षण संस्थानों के आस–पास रहने वाले छात्रों का अनेक प्रकार से शोषण भी किया जाता है।'कटीली राह के फूल' के युवापात्र अनूप कुमार शिक्षार्थ शहर में आया और वहां किराएं पर घर लेकर रहने लगा लेकिन मकान मालिकिन ने उसका कई तरह से शोषण किया। अनजान जगह पर छात्रों का मन भी नहीं लगता। अनजान जगह पर छात्र हर समय तनावग्रस्त रहता है और तनाव में शिक्षा ग्रहण कर पाना असंभव होता है।

कुसंगति में पड़ना :

महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त करने पर छात्र एक स्वच्छन्द वातावरण अनुभव करते हैं । जो उन्हें सुखदाय प्रतीत होता है। अपरिपक्व अवस्था में होने के कारण विद्यार्थी गलत संगति में पड़ जाते हैं। परिणमस्वरूप नशे की प्रवृत्ति उनमें घर कर जाती है। नशा हमारे समाज को दीमक की तरह खोखला कर रहा है। नशे के आदी होने के कारण बहुत से मनुष्य अपनी जीवनलीला समाप्त कर लेते हैं। जिस व्यक्ति को नशे की आदत हो जाती है वह अपने परिवार को अपने जीवन को तबाही की और धकेल देता है।

महाविद्यालय में प्रवेश के उपरान्त विद्यार्थी अपने जीवन के लक्ष्य से भटकने लगते हैं। उनमें नैतिक मूल्यों का ह्रास होने लगता है। अपने से बड़ों की बात को न मानना, फैशन पर अधिक ध्यान देना, संगति के प्रति अधिक वफादार होना आदि के कारण वे अपने जीवन लक्ष्य से भटक जाते हैं। नशा करना, शराब पीना, सिगरेट पीना एवं मारपीट करना आदि अनुचित कार्यों में रूचि लेने लगते हैं। ऐसे समय में विद्यार्थी पर अभिभावकों व अध्यापकों को नजर रखने की आवश्यकता है। शिक्षण संस्थानों को भी ऐसे छात्रों पर नजर रखनी चाहिए।

उपन्यास का मुख्य पात्र अनूप कुमार भी एक अच्छा विद्यार्थी हुआ करता था, लेकिन महाविद्यालय में आने के बाद व छात्रों की संगति के कारण वह भी नशे के रास्ते पर चल पड़ता है। भारत सरकार भी समय–समय पर नशे के विरूद्ध कार्यक्रम चलाती है और 'नशा मुक्ति केन्द्र' जैसे केन्द्रों की व्यवस्था की हुई है। सबसे अहम विषय हमारे सामने हैं अपनी भावी पीढ़ी को नशों से मुक्ति दिलाना। जिसको हम तभी कारगर बना सकते हैं जब समाज के सभी वर्ग के सभी उम्र के व्यक्ति इसके विरूद्ध खड़े होंगे।

छोछी व्यंग्यशीलता :

शिक्षा प्रगति का द्वार है और मानव ने आदि काल से उत्तराधुनिक काल तक जो भी प्रगति की वह केवल शिक्षा के आधार पर। मानव को नैतिक मनुष्य बनाने वाली शक्ति शिक्षा ही है। शिक्षा ही केवल एक साधन है जो मनुष्य में से पाश्विक प्रवृत्तियों को निकाल कर उसमें नैतिक मूल्यों का संचार कर सकती है। मानव समाज में रहते हुए हर पल शिक्षा ग्रहण कर रहा होता है। वह औपचारिक भी हो सकता है निरौपचारिक भी।

यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि आधुनिक छात्र वर्ग महाविद्यालय में मिले स्वच्छन्द वातावरण का अनुचित लाभ उठाते हैं। महाविद्यालयों मे मिले खुले वातावरण के कारण छात्रवर्ग अपना बहुमूल्य समय फैशन परस्ती में गवाँ देते हैं। छात्रवर्ग में अनेक विसंगतियों का समावेश हो जाने के कारण उसका भविष्य अंधकारमय होता जा रहा है। इन विसंगतियों में से एक व्यंग्यशील भाषा का चलन है। व्यंग्यशील भाषा का प्रयोग किसी भी सभ्य समाज के लिए शोभा नहीं देता। व्यंग्य करना व्यर्थ लोगों का कार्य माना जाता है। कुछ लोग अपने को श्रेष्ठ बताने का दम्भ भरने के लिए दूसरों पर व्यंग्य करते हैं। व्यंग्य हानिकारक भी हो सकता है । आधुनिक समय में छात्र वर्ग में व्यंग्यशीलता अधिक देखने को मिलती है इसके माध्यम से छात्र के आपसी वैरभाव का पता चलता है । ऐसे लोगों की सोच संकीर्ण होती है। ऐसा व्यक्ति/छात्र किसी का भी हितैषी नहीं हो सकता।

देखा जा सकता है कि छात्रों में छोछी व्यंग्यशीलता देखने को मिलती है। इस असभ्य आचरण के चलते बहुत–सी छात्राऐं अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ देती हैं। ऐसे छात्र किसी–न–किसी तरह दूसरों को नीचा दिखाने में लगे रहते हैं।

समय का अपव्यय :

भारतवर्ष में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लगभग छः दशक के बाद शिक्षा के क्षेत्र में बहुत वृद्धि हुई है। विशेष रूप से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बहुत वृद्धि हुई है । उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यह प्रगति देखी जा सकती है। शिक्षण संस्थानों में भारी मात्रा में बढ़ोतरी हुई है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से लेकर अब तक विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में बहुत वृद्धि हुई है। अभी भी कुछ नए विश्वविद्यालयों की स्थापना पर विचाराधीन है। उच्च शिक्षण संस्थानों में कैसी शिक्षा दी जा रही है, उसका स्तर कैसा है, गुणात्मकता कैसी है, इसका आंकलन कर पाना मुश्किल है। परन्तु परीक्षाओं के परिणाम, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल छात्रों के प्रतिशत और छात्रों के ज्ञान के स्तर को बढ़ता देखकर एक आम धारणा बन गई है कि उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में दिनों–दिन ह्रास हो रहा है। ह्रास के कारणों में एक कारण समय का अपव्यय भी है। समय किसी का मोहताज नहीं है वह अपनी गति से चलता है। यदि छात्र वर्ग अपने शिक्षणकाल के दौरान ही समय के महत्त्व को जान लेता है तो वह कभी भी पिछड़ेगा नहीं।

निष्कर्ष :

'कटीली राह के फूल' उपन्यास एक तरफ जहां विद्यार्थी जीवन पर आधारित है तो दूसरी तरफ शिक्षा जगत की विसंगतियों को उजागर करने में समर्थ हुआ है। इनके साथ–साथ विद्यार्थी वर्ग के सामने नवीन मूल्यों की प्रतिस्थापना आशान्वित भी करता है। उपन्यासकार की पुरजोर कोशिश रही कि पाठक के हृदय में नैतिक मूल्यों का रोपण कर सके।

उपन्यासकार जीवन के लगभग सभी पहलुओं से भली भांति परिचित है। वर्तमान शिक्षा जगत की विसंगतियां उपन्यासकार का चिंतन मनन पर विवश करती है।

सन्दर्भ–ग्रंथ सूची

1. डॉ. आत्माराम **इक्कीसवीं सदी में शिक्षा** अखिल भारती, 3014 चर्खेवालान, दिल्ली–110006
2. गोपाल कृष्ण अग्रवाल **मानव समाज**, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. गोपाल कृष्ण अग्रवाल **सामाजिक विघटन,** लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1972
4. जी.आर. मदान **समाज शास्त्र के सिद्धान्त** सरस्वती सदन, 7 यू.ए. नगर, दिल्ली–1969
5. डॉ. डी.एल. शर्मा **शिक्षा तथा भारतीय समाज** सूर्य पब्लिकेशन c/o आर लाल बुक डिपो सप्तम संशोधित संस्करण–2007 (निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज), मेरठ–250001
6. एन.आर.स्वरूप सक्सेना, शिखा चतुर्वेदी **उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा** सूर्य पब्लिकेशन, नवीन संस्करण 2006 निकट गवर्नमेन्ट इण्टर कॉलेज मेरठ–250001
7. एम.एम. लबानिया, शशि के. जैन **सैद्धान्तिक समाज शास्त्र** रिसर्च पब्लिकेशन्स, त्रिपोलिया बाजार जयपुर–2
8. बी.डी. गुप्ता **ग्रामीण समाज शास्त्र** सीता प्रकाशन, हाथरस, 1980
9. रवीन्द्रनाथ मुकर्जी **समाज शास्त्र के सिद्धान्त** सरस्वती सदन, मसूरी, प्रथम संस्करण 1965
10. लाल एवं पलोड़ **उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा** विनय रखेजा, c/o आर लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज, मेरठ–250001 संस्करण–2007
11. विद्याभूषण एवं आर. सचदेवा **समाज शास्त्र के सिद्धान्त** किताब महल, दिल्ली–1990
12. शम्भूनाथ त्रिपाठी **समाज शास्त्र विश्वकोष** किताब घर, कानपुर, संस्करण–1980
13. डॉ. एस.के. मंगल **शिक्षण एवं अधिकगम का मनोविज्ञान** टन्डन पब्लिकेशन, बुक मार्किट, लुधियाना–141008
14. सरला दूबे **सामाजिक विघटन** विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली। नवम संस्करण–2000
15. डॉ. सुरेश भटनागर, डॉ. सुरेश जोशी **शिक्षण–अधिगम का मनोविज्ञान** सूर्य पब्लिकेशन, निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज, मेरठ–250001, संस्करण–2008